परम बल ब्रह्मचर्य

इन्द्र के अनेकों अर्थों में से एक अर्थ है इन्द्रियों का स्वामी आत्मा। ब्रह्मचर्य की साधना इन्द्रियों का वि ाय नहीं है, आत्मा का वि ाय है। मन–बुद्धि के द्वारा जब आत्मा ईश्वरीय लगन में मगन होता तो इन्द्रियाँ आत्मा के अनुकूल चलने लगती हैं। कहा भी है ब्रह्मलोक निवासी परमात्मा में जिसकी बुद्धि विचरण करती रहे वही सच्चा ब्रह्मचारी है। मान–शान, व्यक्ति–वस्तु–वैभवों में इन्द्रियों के लिप्त रहने से तो आत्मा पतित, भ्र टाचारी बन जाती है। असंयमित जीवन बिताने से रोगी–दु:खी बन गयी है। ाीघ्र ही बृद्धावस्था को प्राप्त करके जब जीर्ण–शीर्ण रहने लगें तो सर्वश्रे ठ अचूक चिकित्सा है कि परम बल ब्रह्मचर्य का पालन करे ।

वेदों के महावाक्य हैं कि ब्रह्मचर्य के बल से देवी–देवताओं ने महा भयानक मृत्यु को भी मार भगाया। ''ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाध्नत। इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत''।। और इन्द्र नें ब्रह्मचर्य के परमबल से देवों के लिये सुख प्रकाश भर दिया । ब्रह्मचर्य से ही जीवन का कायाकल्प होता है। यह जीवन का महा तप है। महाराज भी म ने भी कहा था ''ब्रह्मचर्य ही सर्वश्रे ठ तप है।'' नर–नारी के तन में वीर्य ही ज्योतिर्मय–पु टतम तत्व है। इसे ही जीवन घृत भी कहते हैं। जिस प्रकार बिजलीघर के जेनरेटर में तेल जलने से सारा ाहर जगमगाता है। मशीनें–पंखे आदि यन्त्र भी चलते हैं। ठीक उसी प्रकार ारीर रूपी नगर में वीर्य ाक्ति से ही मस्ति क विचरण करता है। आखें देखतीं व कान सुनते हैं। प्राण वायु चलती और मुख भा ाण तथा भक्षण करता है। जठराग्नि प्रदीप्त रहती व मन मनन करने में मगन रहता है। इसी से चित्त चिन्तन भी करता है। हृदय में रक्त का निरन्तर संचरण व ाोधन होता है। काम करने के लिये भुजायें फड़कती और पग आगे बढ़ते हैं। ारीर की हरेक चे टा में तथा गति–प्रगति में वीर्य ही व्यय होता है। जो इस बहुमूल्य रत्न का अपव्यय नहीं करता वह परम तेजस्वी–मेधावी तथा पराक्रमी बनता है।

क टों का वीर्य विनाशक है । वीर्य की रक्षा से सब प्रकार के कीटाणुओं और कारणों का विनाश होते रहने से रोग–शोक दूर भाग जाते हैं। पूर्ण स्वास्थ्य व निरोगी काया प्राप्त होती है। वीर्य प्रदीपक भी है। वीर्य कणों की ारीर में जितनी अभिबृद्धि तथा अवस्थिति रहती उतनी ही अधि ाक जीवनी ाक्ति से ारीर ओत–प्रोत रहती है। हर इन्द्रिय की परिपु टता बढ़ती जाने से आभा, सुरुपता और कार्य क्षमता बढ़ती जाती है। वीर्य रक्षण से ारीर के सभी रक्त व रसों का ाोधन भी होता रहता है। त्वचा स्निग्ध रोचक और भव्यता से भरी रहती है। सत्कार्यों में वीर्य का व्यय करना ब्रह्मचर्य है। इसे ही दुर्व्यवहार में जब व्यय किया जाता है तो व्यभिचार कहा जाता है।

अविवाहित होना और बात है परन्तु ब्रह्मचारी होना दूसरी बात है। ाादी–शुदा होने पर भी जो नर–नारी वीर्य रक्षण करते हुये सत्कर्मों में व्यय करते तो ब्रह्मचारियों में भी शिरोमणि कहलाते हैं। वे सारे संसार के लिये सुगन्धित पु प के समान हैं। समाज के लिये प्रकाशमान सूर्य है तो रा ट्र की मुकुट मणि के समान हैं। ब्रह्मचारी के लिये मित्त आहार–विहार तथा नियमित जीवन आवश्यक है। आचार–विचार भी संयमित हो संगति का सदा ध्यान रहे क्योंकि कहा गया है संग तारे कुसंग डुबोये। सुश्रवण–सुकर्म, सुदर्शन, सुविचार, स्वाध्याय आदि सभी साधनाओं की साधना ब्रह्मचारी के जीवन में होनी चाहिये। आत्मानुशासन ही ब्रह्मचर्य का मूल है। जिसके मन–बुद्धि–संस्कार तथा इन्द्रियाँ और दिल–दिमाग नियंत्रण में हों वही सच्चा–2 ब्रह्मचारी है।

आत्माभिमानी स्थिति से ही सच्चा ब्रह्मचारी बना जा सकता है। देह अभिमान व देहभान आज पतन के कारण बने हुये हैं। आत्मिक दृ ि ट–वृत्ति–कृति व स्मृति से ही ब्रह्मचर्य की साधना सहज रीति से सफल हो सकती है। अवसर पाकर मन–बुद्धि–चित्त संस्कार तथा इन्द्रियाँ मूर्छित हो आसक्त तो नहीं हो जाती हैं ? अपनी आत्मा में इतना तेज और ओज होना चाहिये जो किसी भी प्रकार के आक र्णों से अनाकृ ट रहे । काम वेग (वात) से आत्मा रूपी दीपक बुझ जाता है। आत्मा रूपी दीपक सदा जगमगाता रहे तो काम वेग का भी संयमन करके सदा जलता रहेगा। देवों पर इन्द्र का ाासन अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों पर आत्मा का राज्य ही असली ब्रह्मचर्य है।

ब्रह्मचारी आत्मा ही आत्मा की सच्ची आवाज सुन सकती है। अन्यथा सभी के सभी कलियुगी लोग असत्य–भ्रान्त और परू ा वाणियों के मायाजाल में फंसे रहते हैं। ब्रह्मचारी की संकल्पना व विचारणा सत्य होती है। उनके कर्म सत्कर्म होते हैं। जो आत्मा की आवाज सुन सके सच में वही महात्मा और बाद में देवात्मा बन सकता है। ऐसी आत्मायें सदा ऐश्वर्यशाली होती है। ऐसे लोग आत्मा की आवाज के अनुसार ही कार्य–व्यवहार में आते हैं। उनकी चेतना सदा जागृत रहने से वे ही सच्चे योगी–प्रयोगी बन पाते हैं। वे जन–जन के आचरण को ाान्त–संशुद्ध और जागृत करके ब्रह्मचर्य के सर्वोच्च पथ का पथिक अन्यों को भी बना सकते हैं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com